प्रवास :- दिल्ली I.I.T. F. Guest House

तारीख :- 3rd Sept. 1994 ब्रह्म मुहूर्त

उपस्थिति :- पू० महाराजजी, डा० सत्य, श्री साधन

डा० सत्य के प्रश्नों का पू० महाराजजी द्वारा समाधान

० दिव्य मानव :- हर जगह अस्तित्व सम्पूर्ण आँखों के सामने आ जाता है। निर्भ्रम जीवन अपने स्वरूप में सामने आ जाता है।

मेरे सामने अभी भाषा की वस्तु पूरी तरह समझ में आती है। भाषा में रखते समय कहीं धैर्य सधती नहीं इसका कारण पूर्व स्मृतियाँ है। उनसे अब भिन्न सा लगता है।

बहुत सारी बात साफ हो गई।

1- करुणा
2- प्रेम
3- सत्य
4- ईश्वर
5- आनन्द
6- रूप गुण स्वभाव धर्म
7- प्रकाश ऊर्जा ताप
8- जड़त्व, परमाणु की गति कम्पनात्मक, वर्तुलात्मक
9- जागृति
10- भ्रम गति

० करुणा → प्रेम

भ्रमवश आदमी सोचता है कि मैं दूसरा का उपकार करता हूँ। वही चीज जागृत होने पर विश्वास जो साम्य मूल्य है उसके आधार पर बैर विहीन परिवार, स्वराज्य का अंकुर (समाज का प्रमाण) रूप होना ही इसकी मुल बात है। यह विश्वास की अद्भुत लीला बनी। इससे परिवार में सदा ही उपकारान्वित और उपकार का सामान्तर मूल्यांकन हमें सुख का स्रोत बनता है।

इस विश्वास मूल्य के साथ प्रेम मूल्य में सम्प्रेषणा समर्थता होते ही मैं उपकार कर रहा हूँ यह बात छूट जाती है। यही विश्वास से प्रेम में परिपूर्ण होने की विधि है। नित्य उपकारान्वित हूँ, यह बात पूर्ण हो जाती है।

इसमें दृढ़ता उसके पहले बोध, अध्ययन पूर्वक बोध, अनुभव और अभ्यास पूर्वक दृढ़ता का होना देखा गया है।

अभ्यास को उदारता दया कृपा क्रम से अनुभव करता हुआ देखा गया है।

दया कृपा विधिवत अभ्यास में आने के उपरान्त अर्थात सम्प्रेषणा विधि से ही आमंत्रित विधि से

ही यह परिपूर्ण हो जाता है।

① सूत्र :- दया कृपा तक उपकार करने वाला भाग बना रहता है। करुणा पूर्ण विधि से अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा निरन्तर आस्तित्व में उपकारान्वित होने का स्रोत सम्बद्ध हो जाता है।

उदारता :- कोई न कोई आवश्यकता बनी ही रहती है।

प्रेम की व्यवहारिक अभिव्यक्ति में दया कृपा करुणा के प्रयोजन और कार्य के साथ परीक्षण कर प्रमाणित कर सकते हैं।

निरन्तरता :- जब भी आवश्यकता हो तब ही वह किसी भी ब्राँच में आवश्यकता हो उसी में प्रस्तुत हो गये।

सर्वतोमुखी समाधान का यही अर्थ है।

° सत्य - प्रेम

इस मुद्दे मे मैं उपकार कर रहा हूँ इस मुद्दे पर कितनी ही बार सोचना स्वयं प्रेम

का स्वरूप है।

आस्तित्व स्वयं नित्य वर्तमान है। यही नित्य पाठ है। आस्तित्व में सह आस्तित्व नित्य उपकार है। इस विधि से उपकारान्वित विधि से स्वयं को अर्पित ~~सम्पर्ति~~ समर्पित प्रणाली सहित निरन्तर आनन्द व्यक्ति में प्रमाणित होना ही सत्य अभिव्यक्ति और उसका फलन है।

② सूत्र :- आस्तित्व में अनुभूति = नित्य उपकार विधि और क्रम में विश्वास
= आनन्द

° आनन्द और उसकी निरन्तरता :-

सूत्र 1 व 2 के अनुसार मानव परम्परा जागृत होने के क्रम में दीख जाने के उपरान्त जो कुछ भी उपकार संसार (मानव) ग्रहण करने का अधिकार विस्तार होता हुआ देखा गया।

आनन्द निरन्तर सम्प्रेषित और अभिव्यक्त होना है। इसके लिये मै आनन्दित हूँ इस पर भरोसा है अभी तक आनन्द की आवश्यकता को लेकर संसार प्रस्तुत नहीं हो पाया है।

उपकारान्वित = अस्तित्व में सम्पूर्ण मेरे लिये है।
इसके प्रति जागृति ही कुल मिला कर जागृति है।
निरन्तर अस्तित्व जैसा है वैसा ही देखना और
सम्प्रेषित करना।

- वास्तविकता — जैसी वस्तु — देश काल दिशा
  यथार्थता — जैसा का अर्थ — रूप गुण स्वभाव धर्म
  सत्यता → अस्तित्व में — अभिव्यक्ति

वस्तु → इकाई सम्पूर्ण → इकाई + वातावरण
वस्तु को प्रयोजन सहित जानना - मानना → यथार्थ ज्ञान
→ अधिकार पूर्वक

अस्तित्व को देखने का अधिकार है उस अधिकार
का प्रयोग करें।
मैं स्वयं अस्तित्व के अनुरूप हूँ यह Design करना है,
सर्वतोमुखी समाधान आनन्द में अर्पित होता है।

③ सूत्र :- मानव ही अस्तित्व में दृष्टा पद में होने के
कारण सम्पूर्ण चित्रण चिन्तन दृष्टि इनके
संयोजना (पूर्णता के अर्थ में योजना) क्रम में पारंगत
होना ही मानवीयता पूर्ण मानव का स्वरूप है। यही
मानवीय प्रयोजन है।

- ## ईश्वर और आनन्द

इच्छित ऐश्वर्य (जागृति) के रूप में स्वयं
को, स्वयं से, स्वयं के लिये पूर्ण स्वीकृति और प्रमाणित
होना यह ऐश्वर्य सम्पन्नता का प्रमाण सिद्ध हुई। इसलिये
ऐश्वर्य सम्पन्नता = ईश्वर

पहले छः प्रकार के ऐश्वर्य बताये थे :—
अणिमा, गरिमा, महिमा, लघुमा, प्राप्ति, प्राकाम्य।
→ ईश्वरीयता। परन्तु ईश्वरत्व को मनुष्य से
नहीं जोड़ पाये।

इसे जोड़ने का प्रयास तीनो आगम तंत्रो से
आश्रित (आश्रय किया हुआ) और प्रतिपादित (मूल में
रहस्य रहते हुए प्रतिपादित) में इन ऐश्वर्यो का होना
बताया गया।

मध्यस्थ दर्शन

आस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित विधि से मनुष्य का अध्ययन परमावश्यक हो गया। फलस्वरूप जीवन स्पष्ट (सूत्रित + व्याख्यायित) हुआ। साथ ही जीवन ही दृष्टा कर्ता भोक्ता होने के सत्य को देखने को मिला।

अतएव जीवन ही जागृति सम्पन्न स्थिति में ऐश्वर्य सम्पन्न होना देखा गया। यही जीवन सहज वाँछा = इच्छा, मानवीय इच्छा है।

ईश्वरीयता का प्रमाण प्रस्तुत करने वाला = ईश्वर = दिव्य मानव।

पत्थर को भी ईश्वर कह सकते हैं आस्तित्व में कुछ भी ईश्वर विहीन नहीं है।

ईच्छित ऐश्वर्य सम्पन्न = ईश्वर

इच्छा = मनुष्य की इच्छा

= दिव्य जीवन

इच्छा को मनुष्य (जीवन) से अलग करके देखना गलत हो गया।

हर वस्तु में अवस्था और पदानुसार ऐश्वर्य है शून्य का ईश्वरत्व = समग्र व्यवस्था में भागीदारी। शून्य और प्रकृति को अलग नहीं कहा जा सकता।

नाम और वस्तु

वस्तु अपने में कोई नाम नहीं है। वस्तु को हम नाम रखते हैं (मनुष्य)। मनुष्य के अलावा नाम रखने वाला कोई नहीं है।

सार्थक नामकरण देव दिव्य मानव से ही होता है। सही नामकरण से अमानवीय संसार में सम्प्रेषणा क्षीण हो जायेगी। अतः सम्प्रेषणा के लिये उचित नाम चुन लेते हैं।

श्रम - विश्राम (सर्वतोमुखी समाधान)

जीवन ज्ञान + आस्तित्व दर्शन = सर्वतोमुखी समाधान

इसका प्रमाण मानव परम्परा में सार्थक

श्रम = बल और शक्ति नियोजन और उसके फलन के बीच अपेक्षा से अथवा अपेक्षा को तृप्त करने में असमर्थता अथवा अपर्याप्तता श्रम है।

बल — शक्ति नियोजन, फल और अपेक्षा में संगीतीकरण = विश्राम

आदमी इतना ही क्रिया कर सकता है।

इसकी निरन्तरता होना विश्राम परम्परा है।

जीवन जो बल लगाता है उसके फल की आशा करता है छिपे रूप में जो रहता है वह 'आशय' सुखी होने का भाव बना रहता है।

- अवस्था और पद भेद से अर्थ भेद

(गति) कार्य विधि → पदभेद (प्राणपद, भ्रान्तपद, देवपद, दिव्यपद)

(स्थिति) संतुलन विधि → अवस्था भेद (पदार्थ, प्राण, जीव, ज्ञान)

यहाँ भी स्थिति गति अविभाज्य होने का प्रमाण प्रस्तुत है।

प्रयोजन में इन दोनो (कार्य-संतुलन) को ध्यान में रखना पड़ता है।

आवश्यकता → प्रमाण की माँग

प्रमाण की माँग के बिना केवल आशा होती है।

- प्रकाश, प्रकाशमानता का प्रमाण, प्रकाशमानता प्रत्येक एक में प्रमाणित है। इसका प्रमाण प्रत्येक एक अपने अनंत कोणों में प्रतिबिम्बित रहता ही है।

गणित = कल्पना गति रूप

- आसन और प्राणायाम स्वास्थ्य-संयम क्रम में स्वीकृत कार्य है। जहाँ तक ध्यान और समाधि की बात है वह मौन विधि (चित्त वृत्तियों को निरोध करने की विधि) - शास्त्रो और महापुरुषो के वचनो में स्वीकृत है। जीवन विद्या और उसपर आधारित सभी कार्यकलाप मानव परम्परा से सम्बंध है वह जागृति विधि है इसलिये जागृति विधि से मौन विधि को मिलाने की, बाटने की, काटने की आवश्यकता नहीं है।

- समस्या और समाधान का स्रोत केवल मानव ही है। अस्तित्व में समाधान और व्यवस्था ही है। समस्या का मूल कारण केवल भ्रमित मानव है। समस्या से मुक्ति पाना संभव है।

अनुभव का धारक वाहक मानव

- अस्तित्व ही सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति है।
- सम्पूर्ण भाव वस्तु, पद व अवस्था है।
- सत्ता व्यापक रूप में और सत्ता में प्रकृति अनंत इकाईयों के रूप में है। इस का दृष्टा मानव है
- अस्तित्व में ही व्यवस्था सहअस्तित्व सहज है।
- प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था है।
- सभी अवस्था व पद परमाणु में विकास सहज प्रकाशन है।
- अस्तित्व सहज परम्परा के रूप में और उसकी निरन्तरता के रूप में पहचाना जाता है।
- प्रत्येक एक अपने वातावरण सहित सम्पूर्ण है यह पद व अवस्था के आधार पर है।
- प्रत्येक एक निश्चित परम्परा में त्व सहित व्यवस्था है।

- सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति का दृष्टा मानव पद में है।
  - दृष्टा = जानना मानना पहचानना निर्वाह करना = जीवन = गठन पूर्ण परमाणु = चैतन्य परमाणु = समझने वाला
- परमाणु अंश, परमाणु, अणु, अणु रचित भौतिक रासायनिक रचना का दृष्टा मानव ही है।
- परमाणु ही व्यवस्था का आधार है त्व सहित व्यवस्था है
- परमाणु क्रिया निरन्तर है। क्रिया - भ्रम गति परिणाम का अविभाज्य वर्तमान है।
- भ्रम गति परिणाम → प्रस्थापन - विस्थापन, संगठन - विघटन, रचना - विरचना, - जड़ पदार्थ

प्रस्थापन - विस्थापन से मुक्ति
= तृप्त परमाणु = परिणाम पूर्णता
= गठन पूर्ण परमाणु
= चैतन्य इकाई

० व्यवस्था सर्वमानव का अभीष्ट है ।
व्यवस्था = समाधान = सुख = मानव धर्म ।
गठन पूर्णता के बाद चैतन्य परमाणु आशा विचार इच्छा संकल्प अनुभव बल-शक्ति विधि से व्यवस्था को व्यक्त करना चाहता है । यह डबल - डशक्ति भार विहीन है इसीलिये अणुबंधन से मुक्त है ।

दृष्टा पद में कोई वस्तु परम्परा के रूप में मिलेगा तो व्यवस्था के रूप मे होगा । क्योंकि भौतिक रासायनिक रचना भी व्यवस्था के रूप में प्रेषित है । मानव इकाई एक प्रजाति है । प्रत्येक जीवन में गठन का स्वरूप एक है, कार्य एक है, लक्ष्य एक है, शक्ति और बल समान है । इस आधार पर व्यवस्था का कर्ता दृष्टा जीवन है । जीवन सहित ही मानव शरीर परम्परा वैभवित है ।

० विश्राम चाहने वाला गठन पूर्ण परमाणु ही है । यह विश्राम व्यवस्था में प्रमाणित होता है । अभीतक मानव का व्यवस्था में जीना प्रमाणित नहीं हुआ इतिहास के रूप में इसका गवाही है ।

० जड़ परमाणु में श्रम का स्वरूप प्रयास है । प्रयास का फलन गठन पूर्णता में । दूसरे प्रयास का फलन अणु बंधन में प्रमाणित है । प्रयास का साक्ष्य परमाणु अंशो का प्रस्थापन विस्थापन है ।

जड़ परमाणु में गति का स्वरूप विकास है विकास ही गति है । गठन पूर्णता की ओर ।

जड़ परमाणु में परिणाम है श्रम और गति का योग फल ।

श्रम और गति का योग फल = विकास (या रचना) के क्रम में कोई पद ।

गठन पूर्णता के पूर्व श्रम और गति दिखाई नहीं पड़ता है । ~~श्रम~~ परिणाम का दृष्य मनुष्य ही है । यह परिणाम जड़ परमाणु - अणु में दिखाई पड़ता है । गठन पूर्णता के उपरान्त श्रम और गति अक्षय हो जाते हैं । श्रम केवल मनुष्य में दिखाई देता है ।

० चैतन्य इकाई में :-
- श्रम = प्रयास = सर्वतोमुखी समाधान के लिये प्रयास = विश्राम =
• व्यवस्था और समग्र व्यवस्था की समझ व प्रमाण = जागृति = क्रिया पूर्णता ।
- ~~विश्राम~~ मति = गति = जागृति और जागृति पूर्णता की ओर = स्वानुशासन
= प्रामाणिकता = गंतव्य ।

- जीवन इच्छा = सुख शान्ति सन्तोष आनन्द ।
  मानव इच्छा = समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व ।
- शरीर के साथ ही जीवन, जीवन इच्छा और मानव इच्छा को पूरा कर सकता है।
  जीवन ही शरीर को जीवन्त बनाए रखता है एवं दोनो प्रकार की इच्छाओ को सफल बनाता है।
  बिना शरीर के जीवन एवं बिना जीवन का शरीर जीवन इच्छा मानव इच्छा को पूरा नही कर सकता।

- जीवन ज्ञान के अनन्तर ही आस्तित्व दर्शन संभव है क्योकि जीवन ही दृष्टा है । यह निष्कर्ष जीवन ज्ञान से स्पष्ट हो पाता है।
  आस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान के फल स्वरूप मानवीयता पूर्ण आचरण, जिसके प्रमाण में वैर विहीन परिवार, परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था में हर परिवार का भागीदारी । स्वायत्त परिवार और ग्राम का प्रमाण विधि, सहअस्तित्व सूत्र, सन्तुलन और नियंत्रण, न्याय सुरक्षा सहित निष्पन्न होती है।

जागृत मनुष्य दृष्टा है

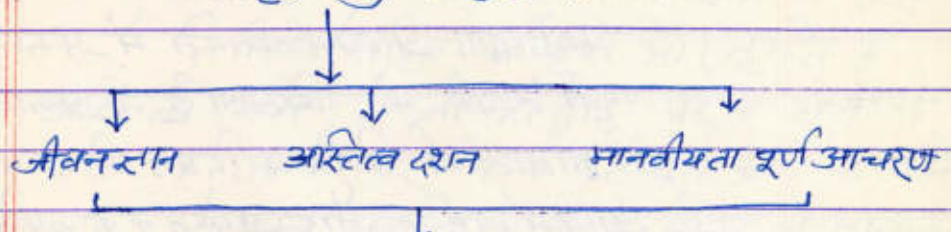

- सम्प्रेषणा क्यों :- जीवनेच्छा एवं मानवेच्छा की तृप्ति और उसकी निरन्तरता के लिये
- सम्प्रेषणा कैसे :- जीवन ज्ञान, आस्तित्व दर्शन, मानवीयता पूर्ण आचरण सम्यक्ता पूर्वक ।

° सम्प्रेषणा :- मानव में यह पाया जाता है कि सम्प्रेषणा प्रत्येक व्यक्ति में प्रकारान्तर से देखने को मिलता है। प्रकारान्तर का तात्पर्य विभिन्न दिशा कोण परिप्रेक्ष्य आयाम लक्ष्य और प्रयोजन के रूप में है।
सम्प्रेषणा शब्द संस्कृत भाषा विज्ञान निबद्ध है। निबद्ध का तात्पर्य "नियंत्रित" से है।
परिभाषा :- पूर्णता के अर्थ में प्रेषणा। प्रेषणा का तात्पर्य प्रेरणा सहित आशयों से इंगित करना और होना। आशय का तात्पर्य मानवेच्छा और जीवनेच्छा से है। मानवेच्छाएं समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व है और जीवनेच्छा सुख शान्ति सन्तोष आनन्द है।
इस प्रकार समाधान समृद्धि अभय सहअस्तित्व तथा सुख शान्ति सन्तोष आनन्द को प्रेरणा सहित इंगित करना ही सम्प्रेषणा है।

° जीवन विद्या :- जीवन को जानने मानने की सहज विधि सहित स्वीकृति और तृप्ति।
अस्तित्व दर्शन :- जीवन ब्रह्म पद में होने के आधार पर नित्य वर्तमान रूपी सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति को भले प्रकार से जानना मानना जिससे व्यक्ति अनंत समाधान के स्रोत से अभिभूत होता है।
मानवीयता पूर्ण आचरण :- उक्त दोनों विधाओं में जागृत होने के फलस्वरूप व्यक्ति से मानवीयता पूर्ण आचरण सहज ही बहने लगता है।
इस विधि से अर्थात ज्ञान दर्शन पूर्वक आचरण सहित एक मानवीयता पूर्ण मनुष्य का होना संभव हो गया है।